सर्वप्रमाणविभ्राजित श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासकृत

रामचरितमानस

वेदादिशास्त्रों के श्लोकों के प्रमाणों से प्रमाणीभूतश्लोकों

के अर्थों सहित टिप्पणियों से अलंकृत

सम्पादक

पं. दामोदर शर्मा, पं. मातृदत्त त्रिपाठी

प्रथम भाग

बाल काण्ड

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

मानित विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

पुस्तकमिदं राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानस्य पुनर्मुद्रणयोजनायां प्रकाशितम्।

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

सर्वप्रमाणविभ्राजित श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासकृत

रामचरितमानस

वेदादिशास्त्रों के श्लोकों के प्रमाणों से प्रमाणीभूतश्लोकों के अर्थों सहित टिप्पणियों से अलंकृत

सम्पादक

पं० दामोदर शर्मा, पं० मातृदत्त त्रिपाठी

प्रथम भाग

बाल काण्ड

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

५६-५७ए, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८

(भारत)

भूमिका

लगभग ३५ वर्षों के सत्संग के फलस्वरूप इस ग्रन्थ को विज्ञ पाठकों के समक्ष रखते हुये मुझे असीम भगवत्कृपा का अनुभव तथा आनन्द हो रहा है, सम्वत् १९७९ वि० से जब इसका छपना सुन्दरकाण्ड से आरम्भ हुआ था तब प्रेमी पाठकों से यह आशा प्रगट की गई थी कि सातों काण्ड शीघ्र ही छप जायँगे, किन्तु इसके आकार प्रकार के कारण वह लालसा आज ८ वर्ष के पश्चात् सं० १९८८ वि० में भगवान ने पूरी की।

गोस्वामीजी के मंगलाचरण के मुख्यतः पहले तथा सातवें श्लोक के आधार पर इस ग्रन्थ की रचना हुई है मंगलमयबर्णो तथा अर्थों, रसों एवं छन्दों के 'संघ' की यथामति व्याख्या करते हुये नानापुराणों, निगमागमों रामायण तथा अन्य ग्रन्थों से तुलनात्मक वाक्य प्रत्येक चौपाई दोहा, छन्दों के नीचे उद्धृत करके उनका सुबोध भाषानुवाद करने का प्रयास इसमे किया गया है। ठौर ठौर टीका टिप्पणियों द्वारा 'भंवर अवरेव' एवं महामंत्रों का चमत्कार यथासाध्य प्रदर्शित करने का प्रयत्न भी हुआ है।

'स्वान्तः सुखाय' ही इस पुण्यकार्य का प्रारम्भ किया गया था। किन्तु ज्यों ज्यों 'पुण्यारण्यविहारियों' के दर्शन होते गये त्यों त्यों मालियों का कार्य बढ़ता गया। श्रीगोस्वामीजी की इस कृति पर नित नव पुष्प चढ़ते हैं और चढ़ते रहेंगे। मुझे आशा है कि यह ग्रन्थ श्रीसीताराम के प्रेमियों के अनुराग बढ़ाने में विशेष सहायक होगा। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जिन महानुभावों ने इस ग्रन्थ के पूर्ण करने में किसी प्रकार की सहायता की है उनका ऋण स्वीकँार करते हुये पाठकों से नम्र निवेदन है कि भूल चूक क्षमा करके इस ग्रन्थ को विचार पूर्वक पढ़े।

अलं विज्ञेषु

चैत्र शुक्ल रामनवमी सम्वत् १६८८ वि०

रणबहादुर सिंह

कथा सूची बालकाण्ड

कथा	पृष्ठ
वंदना	१
मानस वर्णन	६१
कथा प्रबन्ध	७२
शंकर विषाद	७४
सतीमोह	७७
पार्वती जन्म महिमा	८७
उमानाम करण	८९
पार्वती जन्म महिमा	९१
हिमाचल नारद संवाद	९२
हिमाचल मेना संवाद	९४
पार्वती तपश्चर्या	९७
शिव सप्तऋषि समागम	१०१
पार्वती सप्तऋषि संवाद	१०३
पार्वती मुनीश्वर संवाद	१०५
तारकासुर प्रताप	१०७
कामदेव सुर संवाद	१०९
कामदेव प्रताप	१११
कामदेव नाश	११५
शंकर विवाह की कामना	११७
शंकर सुर संवाद	११९
शिवजी की बरात	१२०
शंकर विवाह	१२४
मेना का दुःख	१२६
भरद्वाज, याज्ञवल्क्य संवाद	१३९
पार्वती शंकर संवाद	१४०
श्री रामजन्म का कारण	१५६
कामदेव की चढ़ाई	१६०
नारद को उपदेश	१६३
नारद मोह	१६४
स्वायम्भू मनु की कथा	१७९
प्रतापभानु की कथा	१८९
भूमि संताप	२१६
रामजन्म	२२३
विश्वामित्रागमन	२४६

कथा	पृष्ठ
विश्वामित्र दशरथ संवाद	२४८
ताड़का वध	२५१
मारीच आगमन	२५३
अहल्योद्धार	२५४
जनकपुर वर्णन	२५७
विश्वामित्र जनक संवाद	२६१
जनकपुर गमन	२६५
श्रीरामचन्द्र शोभावर्णन	२६६
अभिलाष	२६९
नित्यकर्म	२७३
पुष्पवाटिका	२७६
सीता स्वयम्बर	२८९
परशुराम संवाद	३२४
अवध में दूतागमन	३४७
अवध में आनन्द	३५२
माङ्गलिक गीत गाना	३५५
बरात की तैयारी	३५६
महाराज दशरथजी का सिद्धियों द्वारा स्वागत	३६३
परस्पर मिलाप	३६४
श्रीसीता रामचन्द्र विवाह	३६९
जनकपुर से अवध प्रयाण	४०५
अयोध्या की सजावट	४१३
बंधुओं समेत राजकुमारों का गृह प्रवेश	४१८
राजा दशरथ का दान व पारितोषिक देना	४२१
अयोध्यावासियों के प्रेमाचन्द, समाज की बड़ाई	४२५
माताओं की और रामचन्द्र की बातचीत	४२७
श्री दशरथजी का रामचन्द्र को हृदय से लगना	४२९
विश्वामित्र प्रयाण	४३१

सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाहु परलोक निबाहू ॥

अर्थ—दोनों राम नाम के अक्षर मधुर और मनोहर हैं वर्णों के नेत्र तथा भक्तों के जीवन हैं स्मरण करने से सब को सुलभ और सुख देने वाले हैं लोक में लाभ और परलोक में निर्वाह करते हैं।

कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लषन सम प्रिय तुलसी के॥
बरनत बरन प्रीति बिलगाती। *ब्रह्म जीव इव सहज सँघाती॥

अर्थ—कहने सुनने और समझने में अत्यन्त अच्छे हैं ये दोनों अक्षर तुलसी दास को राम लक्ष्मण के समान प्यारे हैं दोनों अक्षरों के वर्णन करने में प्रीति अलग होती है परन्तु, ब्रह्म जीव की नाईं स्वभाव से संघाती है।

नर नारायन सरिस सुभ्राता। जग-पालक बिसेष जन त्राता॥
भगित सुतिय कल करन बिभूषन। जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन॥

शिवसंहितायाम्- मुक्तिस्त्री कर्णपूरौ मुनिहृदयपयः पक्षतीतीरभूमी-
संसारापारसिन्धोः कलिकलुषतमः स्तोम सोमार्क बिम्बौ।
उन्मीलत्पुराण पुञ्जद्रुमदलितदले लोचनेचश्रुतीनां-
कामं रामेतिवर्णौ शमिह कलयतां सन्ततं सज्जनानाम् ॥११०॥

अर्थ- मुक्ति रूपी स्त्री के मानों कर्ण फूल हैं, मुनियों के जल प्रवाह रूपी हृदयों के दोनों किनारे, भवसागर के व कलियुग के पाप रूपी अन्धकार के नाश करने को सूर्य व चन्द्रमा, पुण्य रूपी अमृत वृक्ष के दो दल हैं, और वेदों के नेत्र हैं ऐसे राम ये दो अक्षर इस संसार में सदा सज्जनों के आनन्द को इच्छा पूर्वक विधान करें।

***स्वाद तोष सम सुगति सुधा के। कमठ सेष सम धर बसुधा के॥**
जन मन मंजु कंज मधुकर से। जीह जसोमति हरि हलधर से॥

अर्थ-मुक्ति रूप अमृत के स्वाद और सन्तोष के तुल्य दोनों अक्षर हैं, अमृत में स्वाद होता है ऐसे ही रकार के कहने से मुख खुलता है वही स्वाद है और अमृत पान से जैसे मनुष्य अघा जाता है तैसे मकार के उच्चारण में मुख बन्द हो जाता है सन्तोष है कमठ शेष के समान दोनों धरणी के धारण करने वाले हैं, रकार ब्रह्म रूप कमठ और मकार जीव रूप शेष है, भक्तों के उज्वल मन रूप कमल को दोनों अक्षर मधु (जल) और कर (किरण हैं) जिह्वा रूपी यशोदा को दोनों अक्षर श्रीकृष्ण बलराम के समान प्यारे हैं।

---

*ऋग्वेदे-द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरेकः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति। दो पक्षी साथ मिले हुए मित्र की नाईं हैं और अपने समान वृक्ष को सब ओर से संग हैं, उन दोनों में से एक तो फल को स्वादु मान कर खाता है और दूसरा न खाता हुआ साक्षी मात्र है। भाव यह कि प्रकृति रूप एक वृक्ष है इसमें दो पक्षी रहते हैं ये परमात्मा और जीवात्मा हैं, वृक्ष जड़ असमर्थ होता है और पक्षी चेतन होते हैं इस लिये इन दोनों आत्माओं की पक्षियों की उपमा दीगई है, वृक्ष को समान इस अंश में कहा है कि वह भी अनादि है, और ये दोनों व्याप्य व्यापक भाव से एक दूसरे से संयुक्त होने के कारण सयुज्य कहे गये हैं, तथा अनेक बातों में एक से होने के कारण मित्र कहे गये हैं, दोनों में बड़ा अन्तर तो यह है कि एक [जीव] वृक्ष के फल खाता है [अर्थात् कर्म और उनके फल भोगता है] और दूसरा (ब्रह्म) कर्म और उसके फल से रहित है, केवल साक्षीमात्र है।

जैमिनिपु०—रामनाम परं स्वादु भेदज्ञा रसना च या। तन्नाम रसने ख्याहुर्मुनयस्तत्वदर्शिनः॥ राम नाम परम स्वादिष्टपदार्थ है, राम नाम में कितना स्वाद है इस भेद को जानने वाली रसना (जिह्वा) को ही तत्वदर्शी मुनियों ने रसना कहा है।

जन मन मंजु कंज मधुकर से। जीह जसोमति हरिहलधर से। इसमें छेकानुप्रासालंकार। यहां जन मन में मकार की मंजु कंज में जकार की हरि हलधर में अंतिम रकार की आवृत्ति एक ही बार है।

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

सर्वप्रमाणविभ्राजित श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासकृत

रामचरितमानस

वेदादिशास्त्रों के श्लोकों के प्रमाणों से प्रमाणीभूतश्लोकों के अर्थों सहित टिप्पणियों से अलंकृत

सम्पादक

पं० दामोदर शर्मा, पं० मातृदत्त त्रिपाठी

द्वितीय भाग

अवध काण्ड

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

मानित विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासकृत रामायण अवधकाण्ड
की कथाओं की सूची।

कथा संख्या	नाम कथा	पृष्ठ
१	श्रीशिव वन्दना	१-२
२	श्रीराम वन्दना	३
३	गुरु वन्दना	४
४	अवध में आनन्द	५-६
५	अवध का ऐश्वर्य	७
६	कौसल्यादि सहित नगर वासियों का आनन्द	८
७	रामाभिषेक विचार	९-१०
८	दशरथ व वशिष्ठ सम्वाद	११-१२
९	राजा व राजमन्त्रियों का आनन्द	१३
१०	रामाभिषेकार्थ तीर्थजल सहित सामग्रियों का आनयन	१४-१५
,,१	सीता रामचन्द्रजी का अंग स्फुरण पर विचार	१६
,,२	माताओं की देव देवी पूजा	१७
,,३	अवध में आनन्द	१८
,,४	राम व वशिष्ठ सम्भाषण	१९-२०
,,५	राम के निकट लक्ष्मणागमन	२१
,,६	अवध प्रमोद	२२
,,७	अवध में शारदा गमन	२३
,,८	मंथरा उर दाह	२४
,,९	कैकेयी मंथरा सम्वाद	२५-२६
२०	राम पर कैकेयी का प्रेम	२७
२१	कैकेयी व मन्थरा सम्वाद	२८-२९
२२	कुबरी का कुटिलपन	३०-३२
२३	कैकेयी व मन्थरा सम्वाद	३३
२४	मंथरा के कुटिलपन में कैकेयी का मोहित होना	३४
२५	कैकेयी का कोप भवन गमन	३५
२६	पुरबालक आनन्द	३६
२७	राजा का कैकेयी गृह गमन	३७
२८	कैकेयी की कुवेषता	३८
२९	रानी को राजा का मनाना	३९
३०	राजा रानी सम्वाद	४०-४१
३१	कैकेयी का बरदान मांगना	४२
३२	राजा की बिकलता	४३
३३	कैकेयी बचन	४४
३४	रानी को राजा का मनाना	४५-४६
३५	कैकेयी की प्रतिज्ञा	४७-४८
३६	राजा रानी सम्वाद	४९-५०
३७	राजा की बिकलता	५१-५२
३८	राम के निकट सुमन्त्र का जाना	५३
३९	पिता के भवन में राम का जाना	५४
४०	राम से कैकेयी का कथन	५५
४१	राम व कैकेयी सम्वाद	५६-५८
४२	राजा की बिकलता	५९
४३	पिता को शांति करना	६०
४४	अवध वासियों का विषाद	६१
४५	अबला के स्वभाव की प्रबलता	६२
४६	नगर निवासियों का शोक	६३
४७	कैकेयी से विप्रपत्नियों के बचन	६४
४८	रानी को दासियों की शिक्षा	६५-६६
४९	राम का कौसल्या के निकट जाना	६७
५०	राम को देख माता का प्रमोद	६८
५१	राम कौसल्या सम्वाद	६९
५२	कौसल्या की बिकलता	७०
५३	राम माता का भाषण	७१से७४
५४	कौ० के निकट सीता का जाना	७५
५५	कौसल्या सीता सम्वाद	७६
५६	सीता की सुकुमारता	७७
५७	सीता को राम की शिक्षा	७८से८०
५८	राम का भाषण	८१से८२
५९	सीता का भाषण	८३से८६
६०	सीता की सुकुमारता	८७
६१	कौसल्या का प्रेम	८८
६२	सीता का भाषण	८९
६३	राम के पास लक्ष्मण का आना	९०
६४	लक्ष्मण को राम की शिक्षा	९१से९२
६५	लक्ष्मण का भाषण	९३
६६	ल० का सुमित्राजी के पास जाना	९४
६७	सुमित्रा का भाषण	९५से९६
६८	लक्ष्मण को माता की शिक्षा	९७
६९	पुरवासियों का शोच	९८
७०	राजा राम सम्वाद	९९से१००
७१	सीता का पातिव्रत धर्म	१०१
७२	रामचन्द्रजी से कैकेयीवचन	१०२
७३	राम का वन गमन	१०३
७४	रामचन्द्रजी का भाषण	१०४
७५	राजा का भाषण	१०५
७६	राजा की बिकलता	१०६
७७	अवध बा० की बिकलता	१०७ १०८
७८	पुरबासियों का प्रलाप	१०९
७९	शृङ्गबेर पुर में आना	११०
८०	निषाद को राम का दर्शन	१११
८१	रामचंद्र से निषाद प्रार्थना	११२
८२	नि० कृत रामलक्ष्मणसीतानमस्कार	११३ ११४
८३	लक्ष्मण गीता	११५ ११७
८४	रामचंद्रजी से सुमंत्र वचन	११८
८५	सत्य धर्म प्रशंसा	११९
८६	दशरथ के प्रति राम का संदेश	१२०
८७	दशरथ संदेश	१२१
८८	श्रीराम व सीता सम्वाद	१२२
८९	पतिव्रता धर्म	१२३
९०	सीताजी का भाषण	१२४
९१	गंगातीर पर राम का आ०	१२५
९२	केवट का ईश्वर में प्रेम	१२६ १२७
९३	भक्ति वात्सल्यता	१२८
९४	केवट को भक्ति वरदान	१२९
९५	गंगाजी की सीताकृत स्तु०	१३०
९६	गुह का प्रेम	१३१
९७	प्रयागराज समागमन	१३२
९८	प्रयागराज महात्म्य	१३३
९९	त्रिवेणी दर्शन	१३४
१००	राम का भरद्वाजाश्रम गमन	१३५
१०१	भरद्वाजमुनि कृत राम स्तु०	१३६
,,२	राम को देखने के लिये प्रयागबासियों का आना	१३७
,,३	प्रयागराज से प्रयाण	१३८
,,४	अद्भुत तपस्वी का प्रेम	१३९
,,५	श्रीरामचन्द्र व तापस मि०	१४०
,,६	श्रीराम का यमुना दर्शन	१४१
,,७	श्रीराम पर बन्य जीवों का प्रेम	१४२
,,८	श्रीराम का बन ग्राम आदि दर्शन	१४३
,,९	रामके ऊपर पथबासियों का प्रेम	१४४
,,१०	सीताराम ल० की अलौ० शोभा	१४५ १४६
,,११	सीताजी से स्त्रियों की भेंट	१४७
,,१२	सीताजी को ग्राम बधूटियों की आशीस	१४८
,,१३	नरनारियों का पश्चात्ताप	१४९ १५०
,,१४	स्नेह के कारण स्त्रियों की व्याकुलता	१५१
,,१५	स्नेह से नरनारीवृद्ध बालकों की व्याकुलता	१५२
,,१६	सीता राम लक्ष्मण की अलौकिक शोभा	१५३ १५४
,,१७	बाल्मीकि के आश्रम में राम का गमन	१५५
,,१८	मुनि आश्रम दर्शन	१५६
,,१९	बाल्मीकिके आ० में रामका गमन	१५७
,,२०	मुनि दर्शन से राम को आनंद	,,५८
,,२१	बाल्मीकिकृत राम स्तुति	१५९ १६०
,,२२	बाल्मीकिकृत राम प्रशंसा	,,६१
,,२३	बाल्मीकिवर्णित राम० का स्थान	,,६२
,,२४	बाल्मीकिकृत राम स्तुति	१६३ १६४
,,२५	बाल्मीकिकृत राम प्रशंसा	१६५ १६६
,,२६	राम का चित्रकूट में आगमन	,,६७
,,२७	चित्रकूट वर्णन	,,६८
,,२८	चित्रकूट में राम का बास	१६९ १७१
,,२९	कोलकिरातों की प्रेम भरी वाणी	,,७२
,,३०	चित्रकूट में राम का प्रभाव	,,७३
,,३१	चित्रकूट का भाग्य वर्णन	,,७४
,,३२	चित्रकूट का सुख	,,७५
,,३३	श्रीरामचन्द्रजीमें जानकीकाप्रेम	,,७६
,,३४	चित्रकूट में राम का प्रभाव	,,७७
,,३५	सीता लक्ष्मण की बिकलता देखि राम० का कथा वर्णन	,,७८
,,३६	सुमन्त्रका अवध आगमन की कथा	,,७९
,,३७	अश्वों की दशा देख कर निषादराज को खेद	,,८०
,,३८	सुमन्त्र का शोच	१८१ १८४
,,३९	राजा की व्याकुलता	१८५ १८६

त्यक्त्वानुजान् प्रियान् नाहं राज्यमिच्छामि पुष्कलम् ।
पश्चात्तापः प्रभोरित्थं भक्तानां मनसि स्थितम् ॥ ७५ ॥
कौटिल्यं हरतु क्षिप्रं मंगलं च प्रयच्छतु ।

अर्थ । अपने प्यारे छोटे भाइयों को छोड़ कर मैं समृद्धि शाली राज्य को नहीं चाहता इस प्रकार का प्रभु का पश्चाताप भक्तों के मन में विराजी कुटिलता को शीघ्र हरै और मंगल प्रदान करै ।

दोहा—तेहि अवसर आये लषन, मगन प्रेम आनन्द ।
सनमाने प्रिय बचन कहि, रघुकुल कैरव चन्द ॥ ११ ॥

(अध्यात्मे) रामोऽपि लक्ष्मणं दृष्ट्वा प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ ७६ ॥
सौमित्रे यौवराज्ये मे श्वोऽभिषेको भविष्यति ।
निमित्तमात्रमेवाहं कर्ता भोक्ता त्वमेव हि ॥ ७७ ॥

अर्थ । उसी समय लक्ष्मण जी आये तब रामचन्द्र जी भी लक्ष्मण जी की ओर देखकर हँसते २ यह बोले कि हे लक्ष्मण कुल गुरु वशिष्ठ जी से सुना है कि कल मेरा यौवराज्य पर अभिषेक होगा तो भाई राज्य के कर्ता व भोक्ता तुम ही होगे और मैं तो निमित्तमात्र ही हूँगा ।

स्मरण कर कैकेयी व भरत को न हाल देकर ही (विनीतभैरसं ज्येष्ठं, यौवराज्येऽभिषेचयेत्) अर्थात् निज धर्मपत्नी के पेट का जेठा सुशील पुत्र युवराज बनाया जावे, इस मनुस्मृति के लिखे अनुसार राम को राज्य देने की तयारी कर दिया सब अवधवासी प्रसन्न हुए क्यों कि राजा की पूर्णप्रतिज्ञा त्रिकालज्ञ वशिष्ठ मुनि और अन्तर्यामी भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के सिवाय अन्य किसी को नहीं विदित थी वशिष्ठजी के विषय में (सुदिन सुमंगल तबहिं जब, राम होहिं युवराज) इस दोहा पर विस्तार पूर्वक देखिये और श्रीरामचन्द्रजी के विषय में तो (अनुज विहाइ बड़ेहि अभिषेकू) यह चौपाई ही प्रमाण है राजा ने किसी से अपनी पूर्वप्रतिज्ञा नहीं प्रकट की थी इसका भी कारण राज-धर्म ही है कि राजा को चाहिये कि मनोरथ मन में गुप्त रक्खे यथा-राजधर्म सरबस इतनोई । जिमि मन माह मनोरथ गोई—और कैकेयी व भरत को भी राजतिलक के समाचार न जनाने का वही राजधर्म ही कारण है यद्यपि (छल बल कीन्ह चहइ निज काजा) के अनुसार राजा ने कार्य करना चाहा किन्तु वह कैसे हो सकता था जिसके यह वचन थे (रघुकुल रीति सदा चलि आई । प्रान जाय बरु बचन न जाई) तो इससे स्पष्ट सिद्ध हो चुका-कि राजा वचन को नहीं छोड़ सकते थे किन्तु प्राणों को त्यागने को तत्पर थे-तो भला देखिये तो कि दो सत्य वचनों का पालन कैसे हो सकता था कि पूर्व वर से कैकेयी-कुमार भरत राजगद्दी पर बैठें जैसे (दुइ न एक सँग होइ भुवाला । हँसब ठठाइ फुलाउब गाला) तो फिर ऐसे असमंजस में क्या हो सकता था कुछ भी नहीं किंतु विवश होकर ऐसे धर्मज्ञ नीतिज्ञ राजा को प्राण त्यागही करना पड़ा देखिये दशरथ के सत्यव्रत धर्म को परन्तु रामचन्द्रजी ने ही दशरथ के सत्यव्रती होने में सहायता की है जो उन्होंने पश्चात्ताप किया कि (विमल वंश यह अनुचित एकू । अनुज विहाइ बड़ेहि अभिषेकू) इसका भी भाव यही है कि रामचन्द्रजी ने पिता की अनुचित कार्यवाही को सुन कर उनको कुछ नहीं कहा परन्तु धर्मशास्त्र को ही कहा यही व्यंग ध्वनि है और इसी से निकलता है कि राजा अपनी कुटिलता दूर करें (लोभ न रामहिं राज कर, बहुत भरत पर प्रीति । मैं बड़ छोट विचार करि, करत रहेउं नृप नीति) राजा के इस कथन से भी विदित होता है कि राजा प्रथम भरत को राज्य देने की प्रतिज्ञा कर चुके थे इसी से तो रामचन्द्रजी ने पश्चात्ताप रूप व्यंग द्वारा व्यंजित किया है कि पिताजी पूर्व संकल्पित वचन करें जिस से धार्मिक शासन सुदृढ़ हो क्यों कि धार्मिक शासन सुदृढ़ हुए विना राजनैतिक शासन सुदृढ़ नहीं होता यद्यपि इन दोनों शासनों का परस्पर घनिष्ठसम्बन्धहै तथापि रामायण आदि मुख्य धर्म ग्रन्थों में लिखित इतिहासों से यही स्पष्ट होता है कि प्रथम धार्मिक शासन के सुदृढ़ होने से ही दूसरा राजनैतिक शासन सुदृढ़ होता है धार्मिक शासन के सुदृढ़ होने के ही लिये राजा ने प्राण त्याग किया राम ने वनवास किया भरत ने भी नन्दिगाँव में कुटी बनाकर यथा कथंचित् राज्य का पालन किया और अधिक कहां तक लिखें पूर्वकाल में अनेक राजाओं ने धार्मिक शासन सुदृढ़ करने के लिये नाना कष्ट सहन किया था यथा-सिबि दधीच हरिचन्द नरेसा । सहे धरम हित कोटि कलेसा ॥ मुझे अत्यन्त शोक के साथ लिखना पड़ता है कि काल चक्र के हेर फेर से मेरे महात्मा लोग वर्तमान काल में धार्मिक शासन के निर्मूल करने के लिये पूर्ण यत्न कर रहे हैं महात्मा गोस्वामीजी की विचित्र वर्णन चातुरी का यह नगीना नमूना है स्थान २ पर दिखाये गये हैं समस्त प्रजा ने चाहा था कि रामचन्द्रजी राजा हों इस बात को दशरथ रोकने में राज्य देने की प्रतिज्ञा को थी-यही कारण है कि राजा को प्राण त्याग करना

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

सर्वप्रमाणविभ्राजित श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासकृत

रामचरितमानस

वेदादिशास्त्रों के श्लोकों के प्रमाणों से प्रमाणीभूतश्लोकों के अर्थों सहित टिप्पणियों से अलंकृत

सम्पादक

पं० दामोदर शर्मा, पं० मातृदत्त त्रिपाठी

तृतीय भाग

आरण्य काण्ड, किष्किन्धा काण्ड, सुन्दर काण्ड

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

मानित विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासकृत रामायण के आरण्यकाण्ड पर नीचे लिखे हुए ग्रंथो के श्लोकों के प्रमाण हैं। यथा—

ग्रन्थ संख्या	ग्रन्थ नाम	श्लोक संख्या
१	अध्यात्मरामायण	१७६
२	वाल्मीकीयरामायण	८०
३	महारामायण	२८
४	श्रीमद्भागवत	२२
५	हनुमन्नाटक	१७
६	आनन्दरामायण	१५
७	नृसिंहपुराण	११
८	सत्योपाख्यान	७
९	देवीभागवत	६
१०	रघुवंश	६
११	हितोपदेश	५
१२	शिवपुराण	१०
१३	काव्यप्रभाकर	८
१४	भट्टिकाव्य	६
१५	भगवद्गीता	४
१६	व्याससंहिता	५
१७	पंचतंत्र	३
१८	महाभारत	३
१९	पांडवगीता	२
२०	शांडिल्यसूत्र	३
२१	गर्गसंहिता	३
२२	चाणक्यनीतिदर्पण	३
२३	मनुस्मृति	२
२४	शुक्रनीति	२
२५	शिवसंहिता	१
२६	श्रुतबोध	१
२७	पद्मपुराण	१
२८	मातृकाविलास	१
२९	पराशरसंहिता	३
३०	महानिर्वाणतन्त्र	१
३१	मार्कण्डेयपुराण	१
३२	ब्रह्मवैवर्त्तपुराण	१
३३	कुवलयानन्द	१
३४	नवरत्न	१
३५	सुभाषितत्रिशती	१
६६	काव्यप्रकाश	१
३७	चंपूरामायण	१
३८	बृहदारण्यकोपनिषद	१
३९	प्रसन्नराघव	१
४०	रुद्रयामल	१
४१	गुरुगीता	१
४२	कुमारसंभव	१
४३	सनत्कुमारसंहिता	२
४४	भर्तृहरिशतक	१

वाल्मीकिरा० । आबद्धवनमालौ तौ कृतापीडावतंसकौ ।
भार्यापती तावचलं शोभयांचक्रतुर्भृशम् ॥ ३ ॥

अर्थ। वनमाला पहिरे और चोटीमें रक्खे हुये फूलोंका आभूषण करनेवाले वे दम्पति (स्त्रीपुरुष) पर्वतको अत्यन्त शोभित करने लगे।

सुरपति सुत धरि वायस वेखा। सठ चाहत रघुपति बल देखा॥
जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महा मंद मति पावन चाहा॥
सीता चरन चोंच हति भागा। मूढ़ मन्द मति कारन कागा॥

आनन्दरामायणे । ऐन्द्रिः काकस्तदागत्य नखैस्तुंडेन चासकृत् ।
सीतांगुष्ठं मृदुं रक्तं विददाराभिषाशया ॥ ४ ॥

अर्थ। इन्द्रका पुत्र जयन्त कौआका रूप धारण करके उस समय वहां आकर नहों और चोंचसे बार बार सीताजीके कोमल व रंग रंगके लाल अँगूठेको मांसकी आशासे विदीर्ण करने लगा।

*चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक धनुष सायक संधाना॥

दोहा—अति कृपालु रघुनायकहिं, सदा दीन पर नेह।
तासनु आइ सुकीन्ह छल, मूरख अवगुन गेह॥ १ ॥

अर्थ। जो रामचन्द्र अत्यन्त दयालु हैं और सदा दीनोंपर प्रेम रखतेहैं, उस मूर्ख दुर्गुणी इन्द्रकुमारने आकर उनसे छल किया।

प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा। चला भाजि वायस भय पावा॥

नृसिंहपुराणे । इषीकास्त्रं स चादाय ब्रह्मास्त्रेणाभिमंत्रितम् ।
काकमुद्दिश्य चिक्षेप सोभ्यधावद्भयान्वितः ॥ ५ ॥

अर्थ। और उन रामचन्द्रने ब्रह्मबाणसे मंत्रित इषीकास्त्र को लेकर कौआ का उद्देश करके छोड़ा तब वह भययुक्त हो भगा।

धरि निजरूप गयउ पितु पाहीं। राम विमुख राखा तेहि नाहीं॥

---

*जिस प्रकार जयन्त रामचन्द्र जी की जांच के लिये आया था उसी प्रकार उन्होंने भी तिनकाही से बाण का काम लिया। यही आशय पंचतन्त्र में लिखा है—तृणेन कार्यं भवतीश्वराणां किमङ्गवाग्हस्तवता नरेण। सामर्थ्यवाह् जब अपना कार्य केवल तिनका ही से कर सकते हैं तो उन्हें यदि वाणी और हाथ वाले (अर्थात् सब इन्द्रियों से समर्थ) मनुष्य की सहायता मिलजावे तो फिर कार्य सिद्ध होने में क्या सन्देह है।

चला रुधिर रघुनायक जाना यहाँ पर यह सन्देह है कि चला तो रुधिर के साथ सम्बद्ध है रघुनाथ जी ने जाना तो क्या जाना बैठे फटिक शिला पर सुन्दर इस पूर्वोक्त वचन से रघुनाथ जी के शयन की तो सम्भावना ही नहीं है समाधान सुरपति सुत धरि वायस बेषा सठ चाहत रघुपति बल देखा तो रामचन्द्र जी ने यही जाना कि मेरे पराक्रम के परीक्षार्थ यह आया है।

श्रीगणेशायनमः

श्रीसरस्वत्यैनमः

सर्वप्रमाणविभ्राजित श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासकृत

रामचरितमानस

वेदादिशास्त्रों के श्लोकों के प्रमाणों से प्रमाणीभूतश्लोकों के अर्थों सहित टिप्पणियों से अलंकृत

सम्पादक

पं० दामोदर शर्मा, पं० मातृदत्त त्रिपाठी

चतुर्थ भाग

लंका काण्ड, उत्तर काण्ड

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

मानित विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

श्रीमद्गोस्वामि-तुलसीदासकृत-रामायण-लंकाकांड की कथाओं की सूची।

कथा संख्या	नाम कथा	पृष्ठ संख्या
१	बन्दना	१
२	सेतु बांधने के लिये श्रीरामजी की आज्ञा	३
३	श्रीशिवलिंग स्थापित करने की इच्छा प्रकट करना	५
४	सेतु निर्माण	७
५	सेना सहित श्रीराम का समुद्र पार होना	९
६	मंदोदरी द्वारा रावण को शिक्षा ...	११
७	रावण से मन्दोदरी की प्रार्थना ...	१३
८	रावण और मंत्रियों की बातचीत ...	१५
९	रावण का भवन जाना ...	१७
१०	चन्द्रोदय ...	१९
११	रावण का मल्लस्थान ...	२१
१२	रावण के प्रति मन्दोदरी शिक्षा ...	२३
१३	अंगद के प्रति वचन ...	२७
१४	लंका में अंगद का प्रवेश ...	२९
१५	अंगद रावण संवाद ...	३१
१६	रावण के प्रति मन्दोदरी वचन ...	५७
१७	श्रीराम के प्रति अंगद वचन	५९
१८	बानरों का सिंसनाद ...	६१
१९	परस्पर युद्ध के लिये उद्योग ...	६३
२०	लंका में घोर बिलाप ...	६५
२१	हनुमानजी के पाद प्रहार से मेघनाद का विकल होना	६७
२२	शंकर पार्वती संवाद ...	६९
२३	परस्पर युद्ध के लिये उद्योग ...	७१
२४	बानरी सेना का रामचन्द्र के पास आना	७३
२५	रावण द्वारा माल्यवान का तिरस्कार	७५
२६	मेघनाद का बानरी सेना के साथ युद्ध	७७
२७	मेघनाद की माया	७९
२८	युद्ध भूमि की शोभा ...	८१
२९	श्रीलक्ष्मणजी के शक्ति प्रहार ...	८३
३०	कालनेमि रावण संवाद ...	८५
३१	मकरी उद्धार व कालनेमि को दंड	८७
३२	भरतजी का हनुमानजी के पास आना	८९
३३	श्रीरामचन्द्रजी का प्रलाप ...	९१
३४	सुषेण वैद्य को लंका पहुंचाना ..	९३

कथा संख्या	नाम कथा	पृष्ठ संख्या
३५	रावण कुंभकर्ण संवाद ...	९५
३६	कुंभकर्ण द्वारा विभीषण को शिक्षा	९७
३७	सुग्रीव द्वारा कुंभकर्ण का नाक कान काटा जाना	९९
३८	युद्धक्षेत्र में श्रीरामचन्द्रजी का जाना	१०१
३९	कुंभकर्ण व बानरों का युद्ध ...	१०३
४०	कुंभकर्ण बध	१०५
४१	मेघनाद की चढ़ाई ...	१०७
४२	युद्धक्षेत्र में रामचन्द्रजी का जाना ...	१०९
४३	मेघनाद की यज्ञ	१११
४४	मेघनाद युद्ध	११३
४५	मेघनाद बध	११५
४६	परस्पर युद्ध के लिये चढ़ाई ...	११७
४७	श्रीराम रावण युद्ध ...	११९
४८	रावणोपरि लक्ष्मण की चढ़ाई ...	१२३
४९	लक्ष्मण रावण युद्ध ...	१२५
५०	रावणका यज्ञ करना ...	१२७
५१	रावण का रणभूमि प्रयाण ...	१२९
५२	श्रीराम रावण युद्ध	१३१
५३	रावण बध	१५९
५४	मंदोदरी विलाप	१६१
५५	विभीषण का राज्याभिषेक ...	१६५
५६	हनुमान् श्रीजानकी संवाद ...	१६७
५७	अंगदादि को सीताजी के पास जाना	१६९
५८	श्रीजानकीजी की अग्नि परीक्षा ...	१७१
५९	रामचन्द्रजीकी आज्ञासे मातलि का स्वर्ग प्रयाण	१७३
६०	देवस्तुति	१७५
६१	श्रीराजादशरथका स्वर्ग से आना	१७७
६२	इन्द्रकृत श्रीरामस्तुति ...	१७९
६३	शिवजीकृत रामस्तुति ...	१८१
६४	विभीषणद्वारा आकाश से पटभूषण वर्षण	१८३
६५	बानरों का बिदा होना ...	१८५
६६	श्रीजानकीजी को युद्धभूमि आदि दिखाना	१८७
६७	श्रीअवधपुरी का दर्शन ...	१८९
६८	श्रीगंगाजी द्वारा जानकजीको आशीर्वाद	१९१

*बूडहिं आनहिं बोरहिं जेई। भये उपल बोहित सम तेई॥
महिमा यह न जलधि कै बरनी। पाहन गुन न कपिन्ह कै करनी॥

:: दोहा—श्रीरघुबीर प्रताप तें, सिंध तरे पाषान।
ते मतिमंद जे राम तजि, भजहिं जाइ प्रभु आन॥३॥

हनुमन्नाटके—ये मज्जन्ति निमज्जयन्ति च परास्ते प्रस्तरा दुस्तरे-
वार्धौ वीर तरन्ति वानरभटान् संतारयन्तेऽपि च।
नैते गावगुणा न वारिधिगुणा नो वानराणां गुणाः
श्रीमद्दाशरथेः प्रतापमहिमा सोयं समुज्जृम्भते॥१७॥

अर्थ--जो स्वयं डूब जाते हैं और दूसरों को डुबा देते हैं, हेवीर! वही पाषाण दुस्तर समुद्र में तर रहे हैं, न समुद्र के गुण हैं न कुछ वानरों के गुण हैं किन्तु यह श्रीयुतश्रीरामचन्द्रजी के प्रताप की महिमा प्रगट होती है।

बाँधि सेतु अति सुदृढ बनावा। देखि कृपा निंधि के मन भावा॥

भट्टि काव्ये—तेनेऽद्रिबन्धो ववृधे पयोधिस्तुतोष रामो मुमुदे कपीन्द्रः।

अर्थ- पत्थर का बन्धन अर्थात् सेतुबन्ध धीरे २ विस्तार को प्राप्त हुआ इसीसे समुद्र बढ़ने लगा और श्रीरामचन्द्रजी देखकर प्रसन्न हुये तथा सुग्रीवजी हर्षित हुये।

चली सेन कछु बरनि न जाई। गरजहिं मरकट भट समुदाई॥

अध्यात्मे—तेनैव जग्मुः कपयो योजनानां शतं द्रुतम्।
असंख्याताः प्लवन्तश्च गर्जन्तश्च महाभटाः॥१८॥

अर्थ—अगणित महाभट अर्थात बड़े२ योद्धा वानरवृन्द उसी सेतु मार्ग से सौ योजन समुद्र पार को शीघ्र कूदते फाँदते और बड़े २ जोर से गर्जते हुये चले।

सेतु बंध ढिग चढि रघुराई। चितव कृपाल सिंधु बहुताई॥
देखन कहँ प्रभु करुना कंदा। प्रगट भये सब जलचर बृंदा॥
मकर नक्र भखु नाना ब्याला। सत जोजन तन परम बिसाला॥

---

* लंका—बूड़हिं आनहिं बोरहिं जेई। भये उपल बोहित सम तेई॥
यहाँ विभावनालंकार का ४ भेद है। परिभाषा—
जहां अकारण वस्तु से कार्य का प्रगट होना कहा जावे वहां विभावनालंकार का चौथा भेद होता है। जैसे बूड़हिं—सेतु बांधने के समय पत्थर जो दूसरों को डुबाने वाले हैं और आप भी डूबने वाले हैं वेही नाव के समान उतराने वाले होगये।

:: पर्यस्तापन्हुति अलंकार है।